दुधारू पशुओं की डीवर्मिंग (पेट के कीड़ों की रोकथाम)

डीवर्मिंग पशुओं को पेट के कीड़ों जैसे कि गोलकृमि (राउंडवर्म), लीवर फ्लूक और फीताकृमि (टेपवर्म) से छुटकारा पाने के लिए कृमिनाशक दवाएं देने की प्रक्रिया है।

आंतरिक परजीवियों की रोकथाम के लिए डीवर्मिंग वर्ष में दो बार की जानी चाहिए — दक्षिण-पश्चिम मानसून की शुरुआत (मई-जून) और अंत के बाद (अगस्त-सितंबर) में।

कृमि मुक्ति कार्यक्रम को कैसे सफल बनाया जाए?

- किसानों को नियमित रूप से अपने पशुओं की डीवर्मिंग करनी चाहिए।
- डीवर्मिंग करने का सबसे अच्छा समय रोग की प्रारंभिक अवस्था में होता है जब कीड़ों की मात्रा कम होती है।
- पशुओं के गोबर की जांच के बाद ही डीवर्मिंग करनी चाहिए।
- ब्यांत से 15-20 दिन पहले गर्भवती पशुओं को कृमिनाशक दवा अवश्य दें।
- सभी जानवरों को कृमि मुक्त करने से पहले 24 घंटे भूखा रहना चाहिए।
- बछड़ों के जन्म के 15 दिन बाद से कृमिनाशक दवा शुरू कर देनी चाहिए।
- बछड़ों को 6 महीने की उम्र तक हर महीने कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।
- वयस्क जानवरों को हर 4-6 महीने में कृमि मुक्त करना चाहिए।
- उन जगहों पर जहां रोग अधिक (गर्म-नमीं वाले क्षेत्र) होता है, दो वर्ष की आयु तक साल में तीन से चार बार डीवर्मिंग की सिफारिश की जाती है।
- डीवर्मिंग के लिए स्थानीय पशु चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

पशुओं में कृमि मुक्ति कार्यक्रम

परजीवी की प्रकार	**कृमि मुक्ति सारणी**	**कृमि नाशक दवाई**
गोलकृमि	• पहली खुराक 10-15 दिन की उम्र में और फिर हर महीने 6 महीने की उम्र तक • 6 महीने से अधिक उम्र के जानवरों में साल में तीन बार	फेनबेंडाज़ोल, आइवरमेक्टिन
लिवर फ्लूक	स्थानिक क्षेत्रों में वर्ष में दो बार (जनवरी और जून)	ट्राइक्लेबेंडाज़ोल, ऑक्सीक्लोज़ानाइड
फीताकृमि	बछड़ों में साल में दो बार (जनवरी और जून)	प्राज़िक्वेंटेल, निकलोसामाइड

(द्वारा: कंवरपाल सिंह ढिल्लों, मनिंदर सिंह बोंस और अजायब सिंह, कृषि विज्ञान केंद्र, होशियारपुर, और सिमरन जोत कौर, गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, लुधियाना)